विषय सूची

क्र0सं0	विषय शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	पाठ्यक्रम : परिचय	2–4
3	सेमेस्टरवार कलांश विभाजन	5–8
	सैद्धान्तिक विषय	
4	बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम सेमेस्टर)	9–11
5	शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम सेमेस्टर)	12–15
6	वर्तमान भारतीय वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (द्वितीय सेमेस्टर)	16–18
7	प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास–उद्देश्य एवं विषय वस्तु(द्वितीय सेमेस्टर)	19–21
8	शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार–उद्देश्य एवं विषय वस्तु_(तृतीय सेमेस्टर)	22–25
9	समावेशी शिक्षा–उद्देश्य एवं विषय वस्तु(तृतीय सेमेस्टर)	26–27
10	आरम्भिक स्तर पर भाषा एवं गणित के पठन–लेखन क्षमता का विकास–उद्देश्य एवं विषय वस्तु(चतुर्थ सेमेस्टर)	28–29
11	शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन–उद्देश्य एवं विषय वस्तु(चतुर्थ सेमेस्टर)	30–33
	सामान्य विषय	
12	विज्ञान–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ समेस्टर)	34–41
13	गणित–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ समेस्टर)	42–49
14	सामाजिक अध्ययन–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ समेस्टर)	50–58
15	हिन्दी–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ समेस्टर)	59–63
16	संस्कृत–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम एवं तृतीय चतुर्थ समेस्टर)	64–66
17	ऊर्दू–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम एवं तृतीय चतुर्थ समेस्टर)	67–69
18	अंग्रेजी–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (द्वितीय एवं चतुर्थ समेस्टर)	70–73
19	कम्प्यूटर शिक्षा–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम एवं तृतीय समेस्टर)	74–80
20	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (द्वितीय समेस्टर)	81–84
21	शांति शिक्षा एवं सतत् विकास–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (चतुर्थ सेमेस्टर)	85–87
22	कला–उद्देश्य, एवं विषय वस्तु (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ समेस्टर)	88–89
23	शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ समेस्टर)	90–92
24	संगीत–उद्देश्य एवं विषय वस्तु (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ समेस्टर)	93–94
25	इण्टर्नशिप कार्य एवं अंक प्रदान करने हेतु मार्गदर्शक प्रपत्र	95–97
26	प्रशिक्षण के नियम (परिशिष्ट–1)	98–105
27	संदर्भिकाः (परिशिष्ट–2)	106–123

1. परिचय

बी0टी0सी0 (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) रूपरेखा

वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, बाल–मनोविज्ञान तथा बच्चों के सीखने–लिखने की प्रक्रिया एवं बालगत मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भिक शिक्षा के शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु नवीन शिक्षण–विधियों, तकनीकों, शैक्षिक–नवाचारों एवं समसामयिक विषयवस्तु को द्विवर्षीय बी0टी0सी0 पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

बी0टी0सी0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ष में दो सेमेस्टर तथा द्वितीय वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर 6 माह (न्यूनतम 120 शैक्षिक दिवस एवं 10 परीक्षा दिवसों) का होगा।

सेमेस्टरवार विषय विभाजन सारिणी : प्रत्येक सेमेस्टर के अन्तर्गत दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र व विभिन्न विषयगत प्रश्नपत्र एवं एक माह का इण्टर्नशिप समाहित किया गया है। जिनका विवरण निम्नवत् है:–

प्रथम सेमेस्टर	द्वितीय सेमेस्टर	तृतीय सेमेस्टर	चतुर्थ सेमेस्टर
सैद्धान्तिक विषय			
बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया(edu 01)	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा (edu 03)	शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार (edu 05)	आरम्भिक स्तर पर भाषा के पठन/लेखन एवं गणितीय क्षमता का विकास (edu 07)
शिक्षण अधिगम के सिद्वान्त (edu 02)	प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास (edu 04)	समावेशी शिक्षा (edu 06)	शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन (edu 08)
सामान्य विषय			
विज्ञान	विज्ञान	विज्ञान	विज्ञान
गणित	गणित	गणित	गणित
सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन
हिन्दी	हिन्दी	हिन्दी	हिन्दी
संस्कृत/उर्दू	अंग्रेजी	संस्कृत/उर्दू	अंग्रेजी
कम्प्यूटर शिक्षा	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	कम्प्यूटर शिक्षा	शांति शिक्षा एवं सतत विकास
कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)
इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप

कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य में से किसी एक विषय का चयन प्रशिक्षु द्वारा प्रत्येक सेमेस्टर में किया जाएगा, जिसका मूल्यांकन विषयाध्यापक द्वारा ही किया जाएगा, इसी प्रकार समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (एस0यू0पी0डब्लू0) विषय का भी मूल्यांकन मात्र विषय अध्यापक द्वारा ही किया जाएगा। इन विषयों की लिखित/वाह्य परीक्षा नही होगी।

बी0टी0सी0 द्विवर्षीय प्रशिक्षण हेतु पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों की योजना

प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में संज्ञानात्मक पक्ष के साथ–साथ संज्ञान सहगामी पक्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ्यक्रम में निहित विषयों के द्वारा जहाँ ज्ञानात्मक योग्यता का विकास होता है वहीं पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों के द्वारा उनके शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक तथा कौशलात्मक पक्ष का विकास होता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए बी0टी0सी0 प्रशिक्षण में भी इन क्रियाकलापों को समाविष्ट करने की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक प्रशिक्षु इनमें भाग लेकर इन गतिविधियों में कुशलता प्राप्त करके विद्यालयों में प्रभावी व नियोजित तरीके से इनका आयोजन करा सके व बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दे सकें।

प्रशिक्षण की सम्पूर्ण अवधि में प्रत्येक सेमेस्टर में निम्नलिखित पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों का आयोजन नियमित रूप से समय–समय पर अनिवार्य रूप से कराया जाए–

1. राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पर्वों/दिवसों का आयोजन

- गणतंत्र दिवस– 26 जनवरी, स्वतंत्रता दिवस– 15 अगस्त, गाँधी जयन्ती– 2 अक्टूबर
- विश्व पर्यावरण दिवस– 5 जून, शिक्षक दिवस– 5 सितम्बर, मानवाधिकार दिवस– 10 दिसम्बर

2. खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन– राज्य स्तर, मण्डल स्तर तथा जनपद स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिताओं का तथा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संध्या का आयोजन।

- कबड्डी, खो–खो, बैडमिण्टन, बॉलीवाल, कैरम, शतरंज
- विभिन्न प्रकार की दौड़, लम्बी कूद
- भाला फेंक, चक्का फेंक, गोला फेंक

3. साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- निबन्ध लेखन, सुलेख, प्रश्नमंच, वर्तमान के शैक्षिक मुद्दों/समस्या परिचर्चा/वाद–विवाद
- आशुभाषण/आशुलेखन
- काव्यगोष्ठी
- अन्त्याक्षरी (कविता, दोहे, चौपाई, छन्द आदि पर) आधारित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
- कविता/कहानी लेखन (स्वरचित), स्लोगन लेखन

4. सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- गायन प्रतियोगिता–देशगीत, समूह गीत, भजन, लोकगीत, क्षेत्रीय भाषाओं के गीत, गज़ल, कव्वाली।
- नृत्य प्रतियोगिता–एकल नृत्य, समूह नृत्य
- वादन प्रतियोगिता–तबला, बांसुरी, सितार, गिटार, ढोलक
- अभिनय प्रतियोगिता–नाटक, एकांकी, मूक अभिनय

5. कलात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- मेंहदी प्रतियोगिता, पुष्प सज्जा, रंगोली एवं अल्पना प्रतियोगिता।
- पेन्टिंग, पोस्टर/कोलाज निर्माण, आडियो/वीडियो क्लिप।

- ❖ अनुपयोगी वस्तुओं से कलात्मक व उपयोगी वस्तुओं का निर्माण।
- ❖ कढ़ाई/बुनाई प्रतियोगिता, कलमदान, फूलदान, फोटोफ्रेम बनाना व साज–सज्जा।
- ❖ मिट्टी/पी0ओ0पी0 के खिलौने का निर्माण।

6. संस्थान परिसर, प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में वृक्षारोपण तथा परिसर का सुन्दरीकरण।
7. टी0एल0एम0 मेले का आयोजन/विज्ञान–क्लब/पर्यावरण क्लब निर्माण व विज्ञान मेले का आयोजन।
8. आई0सी0टी0 आधारित कक्षा–शिक्षण प्रतियोगिता।
8. स्काउट/गाइड शिविर का आयोजन।
9. शैक्षिक भ्रमण का आयोजन।

सेमेस्टरवार एवं विषयवार कालांश विभाजन

प्रथम सेमेस्टर

क्रम संख्या	विषय	दिनों की संख्या	कालांश (न्यूनतम)	समूह चर्चा/प्रोजेक्ट कालांश (न्यूनतम)
1	विज्ञान	—	50	30
2	गणित	—	50	30
3	सामाजिक अध्ययन	—	75	30
4	हिन्दी	—	45	15
5	संस्कृत/उर्दू	—	45	15
6	कम्प्यूटर शिक्षा	—	60	30
7	कला, संगीत, शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य	—	15	30
8	बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया	—	75	15
9	शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त	—	75	15
10	कक्षा शिक्षण/इंटर्नशिप	30	—	—
11	परीक्षा	10	—	—
			योग–490	**योग–210**

द्वितीय सेमेस्टर

क्रम संख्या	विषय	दिनों की संख्या	कालांश (न्यूनतम)	समूह चर्चा/प्रोजेक्ट कालांश (न्यूनतम)
1	विज्ञान	–	50	30
2	गणित	–	50	30
3	सामाजिक अध्ययन	–	75	30
4	हिन्दी	–	45	15
5	अंग्रेजी	–	60	30
6	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	–	45	15
7	शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य/कला एवं संगीत	–	15	–
8	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा	–	75	15
9	प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास	–	75	15
10	कक्षा शिक्षण/इण्टर्नशिप	30	–	–
11	परीक्षा	10		
	योग		**योग–490**	**योग–210**

तृतीय सेमेस्टर

क्रम संख्या	विषय	दिनों की संख्या	कालांश (न्यूनतम)	समूह चर्चा/प्रोजेक्ट कालांश (न्यूनतम)
1	विज्ञान	—	50	30
2	गणित	—	50	30
3	सामाजिक अध्ययन	—	75	30
4	हिन्दी	—	45	15
5	संस्कृत/उर्दू	—	45	15
6	कम्प्यूटर शिक्षा	—	60	30
7	शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य/कला एवं संगीत	—	15	30
8	शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार	—	75	15
9	विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा निर्देशन, परामर्श (समावेशी शिक्षा)	—	75	15
10	कक्षा शिक्षण/इण्टर्नशिप	30	—	—
11	परीक्षा	10	—	—
			योग—490	**योग—210**

चतुर्थ सेमेस्टर

क्रम संख्या	विषय	दिनों की संख्या	कालांश (न्यूनतम)	समूह चर्चा/प्रोजेक्ट कालांश (न्यूनतम)
1	विज्ञान	–	50	30
2	गणित	–	50	30
3	सामाजिक अध्ययन	–	75	30
4	हिन्दी	–	45	15
5	अंग्रेजी	–	60	30
6	शांति शिक्षा एवं सतत् विकास	–	45	15
7	शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य/कला एवं संगीत	–	15	–
8	आरम्भिक स्तर पर भाषा के पठन/लेखन एवं गणितीय क्षमता का विकास	–	75	15
9	शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन	–	75	15
10	कक्षा शिक्षण/इन्टर्नशिप	30	–	–
11	परीक्षा	10		
			योग–490	**योग–210**

बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया

उद्देश्य

- बाल विकास की अवस्थाओं एवं विभिन्न संकल्पनाओं, सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- बाल विकास के प्रमुख पहलुओं (षारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक) तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों की जानकारी प्रदान करना।
- बच्चों की विकासात्मक व व्यवहारगत कठिनाइयों/समस्याओं की पहचान एवं निराकरण करने की तकनीक से अवगत कराना।
- विविध मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से परिचित होकर, उनके प्रयोग से बच्चों की क्षमताओं का आंकलन एवं संवर्द्धन करने में सक्षम बनाना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

सैद्धान्तिक विषय–edu 01

बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया

कक्षा षिक्षणः विषयवस्तु

1. बाल विकास

- बाल विकास का अर्थ, आवष्यकता तथा क्षेत्र।
- बाल विकास की अवस्थाएं (षैषवावस्था, बाल्यावस्था, किषोरावस्था) एवं इनके अन्तर्गत होने वाले विकास –
  - शारीरिक विकास
  - मानसिक विकास, बुद्धि, बुद्धिलब्धि (आई0क्यू0), बुद्धि परीक्षण
  - संवेगात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास (पियाजे का सिद्धान्त)
  - सामाजिक विकास
  - भाषा विकास–अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
  - सृजनात्मकता एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास
  - व्यक्तित्व का विकास–अर्थ, प्रकार (अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी)।
  - व्यक्तित्व परीक्षण के तरीके एवं समायोजन के उपाय
  - वैयक्तिक भिन्नता– अर्थ, कारक एवं महत्व
  - कल्पना, चिन्तन और तर्क का विकास
- बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक
  - वंषानुक्रम
  - वातावरण (पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयी, संचार माध्यम)

2. अधिगम (सीखना) का अर्थ तथा सिद्वान्त

- अधिगम (सीखना) का अर्थ, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक–बालक का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, परिपक्वता, सीखने की इच्छा, प्रेरणा, विषय सामग्री का स्वरूप, वातावरण, शारीरिक एवं मानसिक थकान।
- अधिगम की प्रभावषाली विधियाँ–करके सीखना, अनुकरण द्वारा सीखना, निरीक्षण करके सीखना, परीक्षण करके सीखना, सामूहिक विधियों द्वारा सीखना, सम्मेलन व विचार गोष्ठी विधि, प्रोजेक्ट विधि, समूह अधिगम।
- अधिगम के नियम–थार्नडाइक के सीखने के मुख्य एवं गौण नियम तथा सीखने–सिखाने में इनका महत्व
- अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यवहारिक उपयोगिता
  - थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त
  - पैवलव का सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त
  - स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम सिद्धान्त
  - कोहलर का सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त
  - प्याजे का सिद्धान्त
  - व्योगास्की का सिद्धान्त

- ब्रूनर का सिद्धान्त
- सीखने का वक्र–अर्थ एवं प्रकार, सीखने में पठार–अर्थ और कारण, निराकरण।
- सीखने का स्थानान्तरण–अर्थ, प्रकार, सिद्धान्त एवं सीखने–सिखाने में स्थानान्तरण का महत्व।

- **अभिप्रेरण**– अर्थ, प्रकार एवं महत्व
  - अभिप्रेरण की विधियाँ– रूचि, सफलता, प्रतिद्वन्दिता, सामूहिक कार्य, प्रषंसा, पुरस्कार, ध्यान, खेल, सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागिता, कक्षा का वातावरण।
  - सीखने–सिखाने के सन्दर्भ में तथा विद्यालयीय व्यवस्था के सन्दर्भ में समुदाय के सक्रिय सदस्यों, ग्राम शिक्षा समितियों/विद्यालय प्रबन्ध समिति तथा अन्य प्रकार की विद्यालयीय समितियों के सदस्यों का अभिप्रेरण
- **ध्यान**–अर्थ, प्रकार, ध्यान को प्रभावित करने वाले कारक एवं बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने के उपाय
  - रुचि–अर्थ, प्रकार तथा बच्चों की रुचि का परीक्षण व उनमें रुचि उत्पन्न करने की विधियाँ, अधिगम में रुचि का महत्व, ध्यान एवं रुचि का सम्बन्ध
- **स्मृति**– अर्थ, प्रकार तथा अच्छी स्मृति के प्रभावी कारक
  - विस्मरण का अर्थ, कारण एवं महत्व
- **सांख्यिकी**–अर्थ, महत्व एवं आंकड़ों का रेखाचित्रीय निरूपण
  - माध्य, माध्यिका एवं बहुलक

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुॅचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- कक्षा– शिक्षण में बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने हेतु मानसिक अभ्यास/गतिविधियों का निर्माण।
- कक्षा में बच्चों की रूचि उत्पन्न करने वाली गतिविधियों का निर्माण।
- बच्चों की मौलिक व भावात्मक अभिव्यक्ति व भाषा विकास हेतु गतिविधियॉ तैयार कराना। जैसे–स्वानुभव व चित्रों के माध्यम से मौखिक अभिव्यक्ति
- कल्पना एवं चिन्तन के माध्यम से कहानी, कविताओं, चित्रों, पहेलियों आदि का निर्माण कराना।
- तार्किक क्षमता के विकास हेतु अभ्यास कार्यों एवं खेलो का विकास।
- बच्चों की आयु, वजन, लम्बाई आदि के मध्य अन्तः सम्बन्धों को टेबल/चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत कराकर विश्लेषण तथा निरूपण कराना।
- किसी कक्षा की मासिक परीक्षा के किसी विषय में प्राप्तांको का सांख्यिकीय विश्लेषण तथा निरूपण कराना।
- बच्चों में विश्लेषण, तर्क, अधिगम एवं कल्पना की क्षमता विकास के लिए आई0सी0टी0 पर आधारित मॉडल/ गतिविधियाँ तैयार करना।

शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त

उद्देश्य

- प्रभावी षिक्षण के विकास हेतु षिक्षण सिद्धान्तों एवं षिक्षण प्रविधियों से अवगत कराना।
- षिक्षण अधिगम सामग्री की आवष्यकता, निर्माण, प्रयोग एवं रखरखाव के सम्बन्ध में जानकारी देना।
- षिक्षण की नवीन विधाओं से परिचित कराना तथा प्रशिक्षुओं को नवीन अधिगम विधियों का अनुप्रयोग सिखाना।
- कक्षावार बच्चों को अपेक्षित अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति कराने हेतु विभिन्न चरणों की जानकारी देना तथा उनको प्रशिक्षित कराना।
- बच्चों में जीवन कौशल विकसित करने हेतु विद्यालय, समुदाय, अभिभावक एवं समाज की भूमिका से परचित कराना।
- विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधाओं के बच्चों पर प्रभाव, का मूल्यांकन करने में प्रशिक्षु को दक्ष करना।
- विभिन्न प्रकार की शिक्षण प्रविधियों से शिक्षक को बच्चों की रुचि उत्पन्न करने का प्रशिक्षण देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

सामान्य विषय–edu 02

शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त

कक्षा षिक्षणः विषयवस्तु

1. षिक्षण का अर्थ तथा उद्देष्य

- सम्प्रेषण
  - सम्प्रेषण का अर्थ
  - आवष्यकता एवं महत्व
  - सम्प्रेषण के घटक/कारक
  - सम्प्रेषण के प्रकार
  - प्रभावी सम्प्रेषण के तरीके
- षिक्षण के सिद्धान्त
  - करके सीखने का सिद्धान्त
  - प्रेरणा का सिद्धान्त
  - रुचि का सिद्धान्त
  - निष्चित उद्देष्य का सिद्धान्त
  - नियोजन का सिद्धान्त
  - चयन का सिद्धान्त
  - वैयक्तिक भिन्नताओं का सिद्धान्त
  - लोकतन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त
  - जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त
  - आवृत्ति का सिद्धान्त
  - निर्माण एवं मनोरंजन का सिद्धान्त
  - विभाजन का सिद्धान्त (लघु सोपानों का)
- षिक्षण के सूत्र
  - सरल से जटिल की ओर
  - ज्ञात से अज्ञात की ओर
  - स्थूल से सूक्ष्म की ओर
  - पूर्ण से अंष की ओर
  - अनिष्चित से निष्चित की ओर
  - प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर
  - विषिष्ट से सामान्य की ओर
  - विष्लेषण से संष्लेषण की ओर
  - मनोवैज्ञानिक से तर्कसंगत की ओर
  - अनुभव से युक्तियुक्त (तर्कपूर्ण) की ओर
  - प्रकृति का अनुसरण
- षिक्षण प्रविधियाँ
  - प्रष्नोत्तर प्रविधि
  - विवरण प्रविधि
  - वर्णन प्रविधि
  - व्याख्यान प्रविधि
  - स्पष्टीकरण प्रविधि

- कहानी कथन प्रविधि
- निरीक्षण एवं अवलोकन प्रविधि
- उदाहरण प्रविधि
- खेल/गतिविधि प्रविधि
- समूह चर्चा प्रविधि
- प्रयोगात्मक कार्य प्रविधि
- वाद–विवाद प्रविधि
- कार्यषाला प्रविधि
- भ्रमण प्रविधि

- षिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम)
    - बालकेन्द्रित षिक्षण
    - क्रिया/गतिविधि आधारित षिक्षण
    - रूचिपूर्ण/आनन्ददायी षिक्षण
    - सहभागी षिक्षण
    - दक्षता आधारित षिक्षण
    - उपचारात्मक षिक्षण
    - बहुकक्षा/बहुस्तरीय षिक्षण
- सूक्ष्य शिक्षण एवं षिक्षण के आधारभूत कौषल
    - सूक्ष्य शिक्षण का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व एवं प्रकार
    - षिक्षण कौषल – अर्थ
    - पाठ प्रस्तावना कौशल
    - उद्देश्य कथन कौशल
    - प्रश्न कौशल
    - व्याख्यान कौशल
    - सोदाहरण स्पष्टीकरण या दृष्टान्त कौशल
    - छात्र सहभागिता कौशल
    - उद्दीपन परिवर्तन कौशल
    - पुनर्बलन कौशल
    - श्यामपट्ट लेखन कौशल
    - पुनरावृत्ति कौशल
    - षिक्षण में एक से अधिक कौषलों एवं गतिविधियों का समावेष।
- अपेक्षित अधिगम स्तर
    - संकल्पना
    - अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति में अधिगम अनुभवों का संयोजन।
    - अपेक्षित अधिगम प्रतिफल का अधिगम के पुनर्बलन में महत्व।
- षिक्षण अधिगम सामग्री
    - अर्थ
    - आवष्यकता एवं महत्व
    - षिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार/वर्गीकरण
    - उत्तम षिक्षण अधिगम सामग्री की विषेषताएं

- षिक्षण अधिगम सामग्री के प्रकार
    - इन्द्रिय जनित अधिगम कराने हेतु विभिन्न पदार्थ/वस्तुयें/क्रियायें यथा–स्पर्श, सूंघना, चखना।
    - दृष्य सामग्री
        - प्रषिक्षु एवं बच्चों द्वारा निर्मित सामग्री, बाजार से क्रय सामग्री
        - विभाग द्वारा प्रदत्त सामग्री यथा – ऑपरेषन ब्लैकबोर्ड किट, गणित किट, विज्ञान किट, पाठ्यपुस्तकें, प्रषिक्षण साहित्य, अनुपूरक अध्ययन सामग्री, षिक्षक सन्दर्षिका आदि,
        - प्रकृति से प्राप्त वस्तुएँ–जड़ें, बीज, सींके, पत्तियाँ, टहनियाँ, बालू, कंकण, पत्थर इत्यादि।
    - श्रव्य सामग्री–टेप रिकार्डर, ऑडियो/सी0डी0/कैसेट प्लेयर, रेडियो आदि ।
    - दृष्य एवं श्रव्य सामग्री–कम्प्यूटर, टेलीविजन, डी0वी0डी0, वीडियो सी0डी0।
- उत्तम षिक्षण अधिगम सामग्री की विषेषताएं
    - बिना लागत के प्राप्त
    - अल्प लागत
    - बहुउद्देष्यीय सामग्री यथा–एक से अधिक कक्षाओं में प्रयोग, एक से अधिक विषयों में प्रयोग, एक से अधिक पाठों/प्रकरणों में प्रयोग, विषयवार पाठ्यवस्तु के अनुरूप, शैक्षिक उपयोगिता।
    - बच्चों की रूचि, आयु एवं मानसिक स्तर के अनुरूप
    - कक्षा व्यवस्था के अनुरूप सामग्री का आकार–प्रकार।
    - शिक्षण में आसानी से प्रयोग करने योग्य।
- षिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण, प्रयोग तथा रखरखाव में सावधानियाँ।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को शिक्षण अधिगम के सिद्धान्त के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- कक्षा के बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में विभक्त कर गाँव/मुहल्ले के स्कूल जाने वाले तथा न जाने वाले 5 वर्ष से ऊपर के बच्चों की सूचना का एकत्रीकरण एवं अनुपात ज्ञात कर सूची का निर्माण करें।
- प्रशिक्षु प्रत्येक माह में समस्त छात्रों को अलग–अलग समूहों में विभक्त कर किसी एक विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता कराना।
- प्रशिक्षु एवं बच्चों द्वारा निर्मित सामग्री के आधार पर एक विज्ञान किट तैयार करना।
- शिक्षण अधिगम सामग्री यथा–श्रृव्य, दृश्य एवं श्रृव्य–दृश्य (तीनों प्रकार की सामग्री) सामग्री को पर आधारित चार्ट/मॉडल का निर्माण करना।
- विभिन्न शिक्षण प्रविधियों पर एक–एक मॉडल/प्रस्तुतीकरण तैयार करना।
- विभिन्न शिक्षण प्रविधियों का तुलनात्मक अध्ययन (किसी एक विषयवस्तु को देकर करना)।